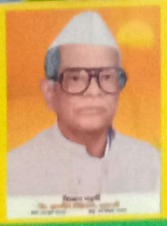

ISSN: 2454-5503
IMPACT FACTOR: 4.197(IIJIF)
(UGC Approved
Journal No. 63716)

CHRONICLE OF HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES

VOL. 4 NO. 1 JAN. 2018

A BIMONTHLY REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL

SPECIAL ISSUE

On the Occasion of One Day National Conference On

WOMEN EMPOWERMENT CHALLENGES AND SOLUTIONS

27th January, 2018

(Book IV)

Editor
Mr. Eshwar L. Rathod

Principal
Dr. A. D. Mohekar

ORGANIZED BY
DEPARTMENT OF SOCIOLOGY
DNYAN PRASARAK MANDAL'S
SHIKSHAN MAHARSHI DNYANDEO MOHEKAR MAHAVIDYALAYA,
KALAMB. DIST. OSMANABAD

ISSN: 2454-5503
Impact Factor: 4.197 (IIJIF)

CONTENTS

1. लिगंभाव, विकास आणि महिलांचे योगदान	प्रा. श्रीमती के. व्ही. काकडे	06
2. महिला चळवळीची सामाजिक आणि राजकीय वाटचाल	प्रा. मॉनिषा किर्तने	08
3. स्त्री विकासात महिला चळवळीचे योगदान	डॉ. किषोर उत्तमराव राऊत	10
4. महिला सबलीकरणासाठी सुरक्षित कायदे आणि उपाय	प्रा. कुकडे सुनिता जगन्नाथरा डॉ. भिसे आर.एम.	13
5. कौटुंबिक हिंसाचार आणि स्त्रिया: एक समाजशास्त्रीय अभ्यास	प्रा. डॉ. आलटे शशिकांत मुकुंदराव	16
6. 21 व्या शतकातील आधुनिक स्त्रियांचे प्रश्न...!	प्रा. डॉ. संदीप रामराव गोरे	19
7. कौटुंबिक हिंसाचार आणि स्त्रिया एक समाजशास्त्रीय अभ्यास	डॉ.मरके दिलीप सिताराम	22
8. महिला सबलीकरणा करता कौटुंबीक हिंसा आणि प्रतिबंधक....	प्रा. डॉ. अनुराधा खाडे	24
9. **कौंटुबिक हिंसाचार ही एक ज्वलंत समस्या**	**डॉ बी डी पवार**	26
10. महिला सबलीकरणामध्ये डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांचे योगदान...	डॉ. प्रतिभा अहिरे	29
11. हुंडा समस्येचा जातीव्यवस्था आणि धर्मांशी असलेला संबंध आणि ...	प्रा. डॉ. गोरे बी.एम	33
12. स्त्रीवादी अभ्यास विकास आणि स्त्रीया	श्रीमती जाधव एस. टी.	35
13. शेती अर्थव्यवस्था आणि स्त्रिया	रशिदा बेगम शेख रहेमतुल्ला	37
14. स्त्रीवादी अभ्यास, विकास आणि स्त्रिया	डॉ. अप्पाराव रामराव वागडव	39
15. भारतीय समाजव्यवस्था आणि स्त्रिया	प्रा. डॉ. असिया चिश्ती	42
16. जागतिकीकरणाचा भारतीय समाजातील स्त्रियांवर झालेला परिणाम ...	प्रा.डॉ.चंद्रशेखर एस.पाटील	46
17. हुंडा पध्दती महिला मानवाधिकारांचे उल्लंघन	डॉ. एन. बी. कदम	49
18. स्त्री-पुरुष असमानता : एक समाजशास्त्रीय अभ्यास	प्रा. डॉ. दामावले डी.एन.	52
19. शेती अर्थव्यवस्था आणि स्त्रिया विशेष संदर्भ बीड जिल्हा	डॉ. यादव घोडके	55
20. प्रसारमाध्यमे आणि स्त्रिया	डॉ. विठ्ठल भिमराव मातकर	59
21. कौटुंबिक हिंसाचार आणि स्त्रिया -	डॉ.जिजाबाई कांगणे	61
22. भारतीय संस्कृति परंपरा और स्त्रियॉं	प्रा. डॉ. कुलकर्णी वनिता	63
23. मराठी कवयित्रींचे काव्य आणि महिला सबलीकरण	प्रा. डॉ. हनुमंत माने	66
24. महिला सुरक्षेत महिला आयोगाची भुमीका	डॉ. सुनिता आत्माराम टेंगसे	69
25. कौटुंबीक हिंसाचार आणि स्त्रिया	डॉ. मुंडे बाळासाहेब विश्वनाथ	72
26. स्त्रियांच्या मानवी हक्कांबाबतची चळवळी	प्रा. सुषमा अर्जुन जाधव	74
27. शेती अर्थव्यवस्था आणि स्त्रियांचा सहभाग	प्रा. पल्लवी इरलापल्ले	77
28. कौटुंबिक हिंसाचार स्त्रिया व प्रतिबंधात्मक कायदा	बोकडे भगवंत चंद्रकांत	80
29. जागतिकीकरण आणि स्त्रिया	प्रा. डॉ. गायके एस.के	81
30. महिला सबलीकरण आणि महिला विषयक कायदे	प्रा. ईश्वर राठोड	84
31. कौटुंबिक अत्याचार : एक सामाजिक चिंतन	प्रा. नागोराव संभाजी भुरके	86
32. भारतातील स्त्री भ्रुण हत्त्या एक अभ्यास	प्रा. भोसले ए.आर.	88
33. उद्योग - स्त्री सबलीकरण	प्रा. सागर लोकनाथ बडगे	90
34. कौटुंबिक हिंसाचार आणि स्त्रीया	प्रा. उगीले माधव उत्तमराव	93
35. हुंडा -प्रथा, समाज आणि स्त्रिया	डॉ. मिसाळ हनुमंत	95
36. महिलांच्या सामाजिक चळवळी	डॉ. आनंदा भिकुजी काळे	100
37. हुंडाप्रथा: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन	प्रा. विद्या खंडारे -गोवंदे	102
38. महिला सबलीकरण : आव्हाने व उपाय	प्रा.तुकाराम कोल्हे	104
39. लिंगभाव विषमता आणि पारधी स्त्री	प्रा. नंदकिशोर उकंडराव राऊत	106
40. कौटुंबिक हिंसाचार आणि स्त्रीया	प्रा.डॉ. विठ्ठल कांबळे	109
41. कौटुंबीक हिंसाचार आणि स्त्रिया	प्रा. तांदळे सुरेंद्र सुंदरराव	111
42. 19 व्या शतकातील साहित्य क्षेत्रातील स्त्रीयांचे प्रतिबिंब	प्रा.स्निग्धा आर. कांबळे	113

Late Ramesn Warpudkar (ACS) College, Sonpeth
Dist. Parbhani

Chronicle of Humanities and Cultural Studies
(UGC Approved Journal No. 63716)
ISSN: 2454-5503
Impact Factor: 4.197 (IIJIF)

22.

भारतीय संस्कृति परंपरा और स्त्रियॉं

प्रा. डॉ. कुलकर्णी वनिता बाबुराव
हिन्दी विभागाध्यक्षा
कै. रमेष वरपुडकर महाविद्यालय, सोनपेठ
ता. सोनपेठ जि. परभणी.

विष्व की सर्वोत्कृष्ट सस्कृति भारतीय संस्कृति है। यह कोई गर्वोक्ति नहीं अपितू वास्तविकता है। भारतीय संस्कृति हमारी मानव जाति के विकास का उच्चतम स्तर कही जा सकती है! इसी की परिधि में सारे विष्व राष्ट्र के विकास के – वसुधैव कुटुंम्बकम् के सारे सूत्र आ जाते है। प्रत्येक व्यक्ति की आन्तरिक इच्छा यही होती है कि वह सुख – षांति से रहे अधिक से अधिक जिवन का आनंद लेकर दीर्घ काल तक आन्तरिक षांति – संतोष का रस लूटता रहे। समूहिक रूप से समुन्नत विचार वाले विद्वानों वाले विद्वानो तथा विचारकों ने समय – समय पर इसी उददेष्य की सिध्दी के लिए ऐसे विचार तथा कार्य के रूप स्थिर किये है जिनके अनुसार आचरण करने से समस्त सांसारिक और आध्यात्मिक सुख – साधन प्राप्त हो सकते है : व्यक्ति और समाज आनदित रह सकते है और पृथ्वी पर ही स्वर्ग की सृष्टि हो सकती है। यदि इन विचारों के अनुसार जीवन ढाल लिया जाये तो मनुष्य का जीवन मधुर बन सकता है।

भारतीय संस्कृति में नारी का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। वह एक साथ माता, पत्नी, बेटी बहन, सास, बहु आदि कई भुमिकाएँ परिवार में निभाती है। वैसे देखा जाय तो नारी ही परिवार की नीव है। "कन्या की सुंदरता, वधु की सरलता और माता की पवित्रता से ही नारी की इकाई परिपूर्ण होती है। परिवार, समाज या राष्ट्र के निर्माण में या विकास में उसकी भूमिका महत्वपूर्ण है। आधुनिक नारी दिषा पकडने के लिए संघर्षषिल है। नर को नारी की भावनाओं को समझते हुए समय के अनुसार अपने का बदल लेना चाहिए और नारी का सहचर समझकर साथ चलने की हिम्मत देनी चाहिए।

दुनिया की आधी आबादी कही जाने वाली स्त्री जाति हमारे देष में परंपरागत रूप से हाषिये की जिन्दगी जीने के लिए बाध्य है! वर्तमान में चल पडे विमर्षो में से स्त्री – विमर्ष के माध्यम से भारतीय स्त्री हाषियें उल्लंघती नजर आती है। अपनी अस्मिता और अस्तिव के सवाल का जवाब ढूढती हुई गली से दिल्ली तक छलांग लगा रही है, किन्तु पुरूषो के चंगुल से अपनी मुक्ति को तलाषती इन चंद महिलाओं ने अपनी लेखनी का अपने तक ही सिमित लिया है। कहने के लिए ' मुक्ति ' षब्द बडा आसान है पर जलने का दर्द तो राख ही जानती है! आज स्त्री षारीरिक दर्द के साथ –साथ मानसिक दर्द झलने के लिए विवष है! पितृसत्तात्मक समाज में उसे जिवनभर पुरूष पर निर्भर रहना पडना है। ऐसे में उसके साथ रिष्तों के रूप में खिलवाड किया जाता है। वह एक साथ स्थापित और निर्वासित होती रहती है। पुरूष वर्ग ने विष्व की निर्मिती से ही नारी को अपने दबाव में रखने को प्रयास किया हुआ है।

19 वी षती के उत्तरार्ध से ही नारी आजादी ने जोर पकडा था। समाजिक विषमता के खिलाफ अमेरिका में नारी आंदोलन की जंग षुरू हुई थी! विश्व में इसकी षुरूआत युरोप से ही मानी जाती है। "1910 में डेनमार्क के कोपनहेगन में आयोजित परिषद में जर्मन की कम्युनिष्ट दो नारीयों क्लारा झेटकिन एवं रोझा लुक्झेबुर्ग ने विष्व की पुरानमतवादी सत्ता के खिलाफ अतः पुरूष वर्ग के दमन चक्र के विरोध में विष्व की नारीयों का एकता का प्रदर्षन करने का ऐलान करके अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का सुझाव रखा था! उस परिषद में भारतीय महिला भी उपस्थित थी 1907 में जर्मन के स्टुटगार्ट में आयोजित महिला परिषद में भारत का प्रतिनिधित्व निभाया था! मॅडम कामा ने।" 1. मतलब 8 मार्च की मुख्य प्रणेताओं में मॅडम कामा का भी अनन्य साधारण महत्व रहा है।

वैदिक काल में स्त्री – पुरूष ऐसा भेद नही माना जाता था। स्त्रियॉं ब्रहमचर्य जीवन जीते– जीते अपनी ज्ञान साधना पुर्ण करती थी। इसलिए ऐसी विद्वान स्त्रियों को 'ब्रम्हवादिनी ' जैसी उपाधियॉं दी

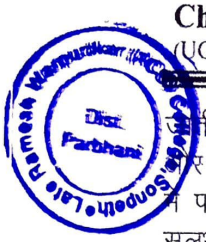

थी! उस समय सर्वोच्च शिक्षा प्राप्त करने का नारी हो पूर्ण अधिकार था।" ऋग्वेद में अनेक सूत्र और मंत्र उस समय की लेखिकाओं – ऋषिकाओं और ब्रम्हचारिणियों द्वारा लिखे गये ऐसी महान स्त्रियों में पहली स्त्री 'वाच' है उसके बाद महाकाव्य लिखने वाली गंगा देवी, घोषा, सूर्या, षर्ची, गार्गी, मैत्रेयी, सुलभा ऐसी अनेक स्त्रियॉ थी! " 2. वैदिक युग में प्रौढ विवाह प्रथा का प्रचलन था स्त्री और पुरूष अपनी रूचि के अनुसार विवाह करते थे। पुरूष स्त्री के साथ मैत्रिपूर्ण व्यवहार करता था वैदिक काल में नारीयों की स्थिति की चर्चा करते हुए आषारानी व्योरा ने लिखा है "धन की देवी लक्ष्मी, ज्ञान की देवी सरस्वती, और षक्ति की देवी दुर्गा " से क्या अर्थ निकलता है अवष्यही प्राचीन भारतीय नारी इन सब षक्तियों की अधिकारिणी रही है! ऋग्वेद में सरस्वती को ' वाक्षक्ती ' कहा गया है! जो उस समय नारी की कला और विद्वता का परिचायक है। इससे यह सिद्ध होता है कि, महिलाएँ उच्च षिक्षा की अधिकारिणी थी! लक्ष्मी और दूर्गा के रूप में अर्थ सत्ता की स्वामिनी थी! अर्धनारीष्वर कल्पना उनके समान अधिकार की भी पुष्टि करती है।" 3. पुष्पावती खेतान के अनुसार वेदो " में स्त्री – पुरूष को जीवनरूपी रथ के दो पहिए माना है, उन्हे आकाष और भूमि के समान एक दुसरे का पूरक उपकारक माना है! इससे यह स्पष्ट होता है उस युग में नारी को श्रेष्ठ माना गया है स्त्री और पुरूष की समानता तथा परस्पर पूरक होने की स्थिती इस युग में दिखाई देती है सामाजिक जीवन में नारी की स्थिती जितनी उँची थी उतनी बाद में कभी नहीं रही। एक दृष्टि से यह काल नारी की स्वतंत्रता का ' स्वर्णयुग ' था।" 4. आगे चलकर उत्तर वैदिक काल में मनुष्य का ध्यान आनंद से हटकर तपस्या की और जाने लगा और नारी को सफलता में बाधा मानकर उसकी निंदा की जाने लगी! पुत्री को दुःख का कारण घोषित किया है। बहुपत्नी प्रथा और अनमेल विवाह की प्रथा षुरू होने से स्त्री का दर्जा और हीन हो गया।

इतिहास बतात है की संसार में जितने भी युग प्रवर्तक, महापुरूष हुए है, उनके पीछे किसी न किसी रूप में महिलाओं की ही प्रेरणा रही है! भारतीय संस्कृति में नारी को देवी मानकर नारी के लिए पतिवृता धर्म की मान्यताएँ स्थापित की है। पतिवृता धर्म का पालन करने वाली नारी को ही पुज्य माना गया है यहॉ भी यह बात स्पष्ट है कि पुरूष की होकर रहनेवाली नारी ही पुज्य है। संपूर्ण संस्कृति में नारी को एक स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में कहीं भी नहीं देखा गया है। जहॉ वह पुरूष द्वारा बनाए गये नियमों में बंधकर रही है वही पूज्य है और जहॉ उसने अपने स्वतंत्र आस्तिव को बनाने का प्रयत्न किया है वहॉ निंदा का पात्र बनी है! वह केवल मानवी व मानुषी है, न पुरूष से हेय न पुरूष से श्रेष्ठ आज हम अक्सर इस बात पर काफी विलाप होते देखते है कि मिडिया और खासतौर से विज्ञापनों नें भारतीय स्त्री कि छवि को तोड दिया है भारतीय संस्कृति पर चहु और खतरा मॅडरा रहा है। दरसल जो लोंग भारतीय संस्कृती वाली स्त्री की बात कर रहे है। वह स्त्री छवि वह है जिस पर आसानी से षासन किया जा सकता है। परिवार की यातनाओं से जिसकी आवांज को दबाकर रखा जा सकता है! प्रेम पुरूष केलिए मुक्ति है और स्त्री के लिए बंधन। "स्त्री के व्यक्ति, व्यक्तित्व और बौध्दिक विकास में पुरूष (पिता, पति, पुत्र) अक्सर खलनायक की भूमिका में ही क्यों दिखाई देते है? स्त्री परिवार या विवाह संस्था से बाहर स्वंतंत्र रूप से सम्मानजनक जीवन क्यों नहीं जी सकती"? 6. क्षमा षर्मा लिखती है! बिजिंग सम्मेलन में स्त्रियों ने यह घोषना की – " यह षरीर मेंरा है और उसकी स्वामिनी मै ही हूँ।" 7. आज के नारी आंदोलन के उद्देष को स्पष्ट करते हुए नारीयों के आपसी विचार विनिमय का महत्व देते हुए प्रभा खेतान लिखती है। " नारीवादी सापेक्षिक सत्य की खोज कर रहा है। तथा इस सापेक्षिक कल्याणकारी सच का मानने के लिए आपसी संवाद की जरूरत है।" 8. आषारानी व्यारा के अनुसार " पुरूष को प्रकृति ने षरीर बल अधिक दिया है तो स्त्री को दृढता और षरीर सौंदर्य अधिक। पुरूष संसार में जोष और साहस भरने के लिए बना है। तो स्त्री धैर्य और चारित्र सिखाने के लिए, करूणा और प्रेम बरसाने के लिए दोनों की भिन्न प्रकृति से ही परस्परा पूरकता और जीवन की पूर्णता संभव है।" 9.

भारतीय संस्कृति के प्रभाव से प्रत्येक परिवार में स्वर्ग जैसी षांति एवं सदभावनाओं का निवास रहता था पती – पत्नी के बीच कैसे आदर्ष सम्बध होने चाहिए, इसके असंख्य उदाहरण भारत में मिलते है, जो हमारे यहॉ के पत्नी – वृत्ती पुरूष और पति – वृत्ता नारीयों ने पग – पग उपस्थित किये है। सीता, सावित्री, षैव्या, दमयन्ती, गान्धारी, अनुसया, सुकन्या की कथाएँ भारत में घर – घर गाई जाती है।" पर स्त्री का माता एवं पुत्री समझने वाले सभी कोई थे। छत्रपती षिवाजी महाराज द्वारा यवन कन्या

का आदर से सुरक्षित रूप में राजमहल में पहुँचा देना अर्जुन को उर्वषी का लौटा देना, रूप गर्विता देवयानी का प्रस्ताव अस्वीकार करना, जैसे संयम के प्रसंगो की कमी नही है।''10. वास्तव में सामाजिक, आर्थिक लौकिक, वैयक्तिक, पारलौकिक सभी प्रकार की उन्नति का विधान भारतीय संस्कृति में निहित है।

संदर्भ :–

- 1) हाषियें की आवाज – मासिक पत्रिका अप्रैल 2013 – पृ. 24.
- 2) कृष्णा अग्निहोत्री की कहानियों में नारी – डॉ. बालाजी श्रीपती भुरे – पृ. 47.
- 3) साठोत्तरी हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में नारी – डॉ. सौ. मंगल कप्पीकेरे –पृ. 32.
- 4) वृही पृ. 32.
- 6) स्त्रीत्ववादी विमर्ष समाज और साहित्य – क्षमा षर्मा – पृ. 147.
- 7) वही – पृ. 156.
- 8) हंस पत्रिका – अप्रैल 2000 – राजेंद्र यादव – पृ. 33.
- 9) साठोत्तरी हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में नारी – डॉ. सौ. मंगल कप्पीकेरे – पृ. 13.
- 10) भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्व – श्रीराम षर्मा आचार्य वाङ्मय – पृ.1.1

❑❑❑

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani